



क्रांति धरा

सितंबर 2025 छमाही

मेरठ अंचल की गृह पत्रिका



यूको बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



यूको बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार सहित कुल 8 पुरस्कारों से सम्मानित किया गया



क्रांति धरा

अप्रैल-सितंबर, 2025 छमाही

संरक्षक

श्री जावेद

उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

प्रेरणा

श्री महेंद्र सिंह

सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

श्रीमती दीप्ता पोरस

मुख्य प्रबंधक

श्री आशीष सिंह गौड़

मुख्य प्रबंधक

श्री विवेक कुमार

मुख्य प्रबंधक

संपादक

श्रीमती प्रतिभा रतन

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

पत्र व्यवहार / सुझाव का पता

यूको बैंक

अंचल कार्यालय मेरठ

सी-2/6, डी ब्लॉक, मवाना रोड,

गंगा नगर, मेरठ (उ.प्र.)

पिन 250001

एक टीम - एक स्वप्न - एक लक्ष्य

इस अंक में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।

विषय

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

अंचल प्रमुख का संदेश

उप अंचल प्रमुख का संदेश

संपादकीय

आलेख

भरोसा और अंतर्ज्ञान : एक अनकही कहानी - स्वाति तिवारी

वित्तीय अनुशासित बनने की आवश्यकता - अंकित भारद्वाज

बैंकिंग में साइबर जागरूकता : डिजिटल सुरक्षा की अनिवार्यता -

सागर पीपावत

डिजिटल बैंकिंग : एक नई क्रांति - चंद्रशेखर

बैंक के एटीएम व शाखाओं की सुरक्षा को सूद करने में नवीन

ई-सर्विलांस सिस्टम की उपयोगिता - अशोक कुमार

अनुभव

पेरेंटिंग - एक अनुभव - अरुण मलिक

कविता

काश - दीप्ता पोरस

कहानी

मिथ्या या सत्य - विनीत कुमार

दृष्टिकोण - अल्पना शर्मा

सशक्त नारी : आत्मनिर्भर भारत - सुरभि शर्मा

मुख्य पृष्ठ का संक्षिप्त विवरण

गतिविधियां

शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक

एम.एस.एम.ई.कृषि एवं रिसोर्स कार्निवाल

राष्ट्रीय लोक अदालत

बच्चों का बगीचा

राजभाषा

नराकास, मेरठ में हमारी सहभागिता

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा

अलीगढ़ शाखा का निरीक्षण

अंचल में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

जीवन परिचय

फणीश्वर नाथ 'रेणु'-ग्रामीण संवेदनाओं के सर्जक

व्यवसाय सितंबर, 2025 - शीर्ष शाखाएं

पृष्ठ

2

3

4

5

6

8

12

14

17

20

22

23

25

28

30

31

32

33

34

35

37

38

39

41



प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश



प्रिय यूकोजन,
आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' श्रेणियों की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएँ, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बनें। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएँ, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी





उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख का संदेश

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

प्रिय साथियो,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारे अंचल कार्यालय मेरठ की पत्रिका 'क्रांतिधरा' का प्रवेशांक आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

बैंकिंग क्षेत्र निरंतर बदल रहा है और इन बदलावों के साथ आगे बढ़ने के लिए सीखना और जानकारी साझा करना बहुत जरूरी है। पत्रिका में आपको बैंकिंग के वर्तमान रुझानों, डिजिटल सेवाओं के विस्तार, ग्राहक अनुभव को और बेहतर बनाने के प्रयासों तथा हमारे कर्मचारियों की उपलब्धियों से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेंगी। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल आपको प्रेरित करेगी, बल्कि हमारे कार्यस्थल की सकारात्मक ऊर्जा और टीम भावना को भी मजबूत करेगी।

हिन्दी के प्रति सभी लोगों को जागरूक करने में मेरठ अंचल कार्यालय द्वारा यह एक अद्भुत प्रयास है। हिन्दी पूरे भारत की आम बोलचाल की भाषा होने के साथ-साथ भारत की राजभाषा भी है। राजभाषा अर्थात 'राज-काज की भाषा' या सरल शब्दों में 'कार्यालय में प्रयोग होने वाली भाषा' है। हिन्दी का विस्तार न केवल भारत तक है अपितु वह विदेशों में भी अपने परचम लहरा चुकी है। हिन्दी भाषा सूचनाओं का आदान-प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। अखबारों में, अनेक पत्रिकाओं में, विज्ञापन बोर्डों आदि पर हिंदी में विज्ञापन दिखाई देते हैं। अतः हिंदी कार्यालय मात्र की ही भाषा नहीं अपितु हमारे जीवन का अभिन्न अंग भी है।

बैंकिंग में भी हिन्दी भाषा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रिका के माध्यम से बैंक का समुचित प्रचार होता है जिससे सभी जन बैंक की नित नई योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर उसका पूर्ण लाभ ले सकते हैं। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम सभी हिन्दी भाषा के अनेक पहलुओं से अवगत होंगे। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन और संपादन के सहयोग कर्ताओं को उनकी मेहनत और समर्पण के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

जावेद





सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख का संदेश

साथियो

जैसा आप सभी जानते हैं कि वित्तीय वर्ष 2025-26 के 6 माह समाप्त हो चुके हैं। हमारे सामने जो नतीजे आए हैं, वे हमारी अपेक्षा से कम हैं। परंतु हमारा मानना है कि यह वित्तीय वर्ष हम सभी के लिए नए अवसर तथा नतीजों में उत्कृष्टता की आशा लेकर आया है। हम सभी को आत्म-विश्लेषण करने की आवश्यकता है कि हम क्या नहीं कर पाए तथा हमें क्या करना चाहिए। मेरा यह मानना है कि हमारे अंचल में वे सभी संभावनाएं उपलब्ध हैं जोकि हमारे ग्राहकों द्वारा अपेक्षित हैं। ये इस प्रकार हैं :-

1. हमारी लगभग सभी शाखाएँ पूर्णरूप से सुसज्जित हैं / नवीनीकरण किया जा चुका है। इससे बैंकिंग हेतु अच्छा परिवेश तथा वातावरण प्राप्त होता है।
2. हमारी शाखाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का बेहतरीन उपयोग किया गया है। हम अपने ग्राहकों को ई-बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, एम पासबुक, पीओएस, मर्चेन्ट क्यूआर, साउंड बॉक्स आदि की सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे हैं।
3. प्रतिस्पर्धा के इस युग में हमारे पास जमा तथा अग्रिम की बहुत अच्छी योजनाएं हैं जोकि अन्य बैंकों की तुलना में ज्यादा ग्राहकोंमुखी हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे पास युवा बैंकरों (नवनियुक्त) तथा अनुभवी बैंकरों का मेल है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे पास जोशीले स्टाफ सदस्यों की सहायता तथा मार्गदर्शन हेतु अनुभवी स्टाफ सदस्य भी हैं।

अतः सफलता के सभी सूत्र हमारे पास हैं जो हमें विश्वास दिलाते हैं कि हम सभी मिलकर बैंक की उत्कृष्ट सफलता में योगदान दे सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि -

**“जीत और हार हमारी सोच पर निर्भर करती हैं,
मन लो तो हार होगी, ठान लो तो जीत होगी। ”**

महेंद्र सिंह



संपादकीय

नमस्कार !

हमारे अंचल की छमाही पत्रिका के प्रथम अंक में आपका हार्दिक स्वागत है। यह पत्रिका न केवल हमारी उपलब्धियों, नवाचारों और प्रयासों का दस्तावेज़ है, बल्कि हमारे अंचल के सामूहिक उत्साह, सृजनशीलता और समर्पण का प्रतिबिंब भी है।

आज का बैंकिंग जगत निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है - तकनीक, पारदर्शिता और ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण ने इसकी दिशा और गति दोनों को नया रूप दिया है। इस परिवर्तन के बीच हमारा उद्देश्य सदैव एक ही रहा है - विश्वसनीयता, सेवा और उत्कृष्टता।

इस अंक में आपको अंचल की विभिन्न शाखाओं की पहल, कर्मचारियों की प्रेरणादायक कहानियां तथा बैंकिंग क्षेत्र की नई जानकारियाँ पढ़ने को मिलेंगी। साथ ही रचनात्मक लेख, कविताएं और विचार भी आपके मन को अवश्य छूएंगे।

हमारा प्रयास रहेगा कि यह पत्रिका केवल सूचना का माध्यम न होकर प्रेरणा का स्रोत बने। आपके सुझाव, विचार और सहयोग से ही हम इसे और समृद्ध बना सकते हैं।

सभी सहयोगियों, लेखकों और पाठकों का हार्दिक आभार। आशा है यह अंक आपके मन को उतनी ही प्रसन्नता देगा, जितनी हमें इसे तैयार करने में मिली। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रतिभा रतन



स्वाति तिवारी
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय

आलेख

भरोसा और अंतर्ज्ञान : एक अनकही चेतावनी

बैंकिंग एक भरोसे का संगठन है। इसमें हर लेन-देन, हर संवाद और हर निर्णय आपसी विश्वास पर टिका होता है। हम सभी को एक-दूसरे पर किसी न किसी स्तर पर भरोसा करना ही पड़ता है – लेकिन यह भरोसा आँख मूंदकर नहीं, बल्कि सतर्कता के साथ होना चाहिए।

आज जब दुनिया तेज़ी से बदल रही है और हर दिन नई साइबर धोखाधड़ी की खबरें सामने आती हैं, तब यह समझना और भी ज़रूरी हो गया है कि केवल प्रक्रिया पर निर्भर

रहना हर बार हमारी सुरक्षा की गारंटी नहीं हो सकता। दस्तावेज़ पूरे हैं, मेल अधिकृत दिख रही है, कॉल किसी परिचित अधिकारी की है – फिर भी कुछ गलत हो सकता है। “एक अनपेक्षित कॉल... और भीतर की एक आवाज़” कल ही की बात है।

एक दूरस्थ शाखा से अचानक कॉल आया। दूसरी ओर शाखा प्रबंधक थे – उनकी आवाज़ में घबराहट थी। वे कह रहे थे कि एक बड़ी राशि का तुरंत ट्रांसफर करना है और हेड ऑफिस से इसकी अनुमति मिल चुकी है। शुरू में सब सामान्य लगा...लेकिन तभी एक नाम पर नज़र ठहर गई। जिस व्यक्ति को

पैसा भेजना था – उसका नाम कुछ जाना-पहचाना लग रहा था। मन में हल्की-सी झिझक हुई। बातचीत में कुछ ऐसा था, जो शब्दों में नहीं था, पर भीतर कहीं एक

चेतावनी-सी गूँज उठी।

“कुछ ठीक नहीं लग रहा है...”

मैंने विनम्रता से कॉल समाप्त की। थोड़ी देर बाद उस व्यक्ति का पुराना नंबर खोजकर फोन मिलाया। उधर से जो जवाब आया, उसने जैसे सब कुछ थाम दिया –





"वे तो दो साल पहले ही इस दुनिया से जा चुके हैं... ।"

मेरे हाथ से फोन गिरते-गिरते बचा। मन ही मन सोचा – अगर मैंने वह राशि ट्रांसफर कर दी होती तो? उस कॉल, उस मेल, उस तथाकथित 'प्रक्रिया' पर भरोसा कर लिया होता तो?

लेकिन उस एक हल्की-सी बेचैनी ने – उस पल के अंतर्ज्ञान ने – मुझे एक बड़ी गलती से बचा लिया।

जब तर्क चुप हो जाए, अंतर्ज्ञान बोलता है। हम जीवन में अक्सर कुछ परिस्थितियों को सामान्य मान लेते हैं और कुछ लोगों पर सहज ही भरोसा कर लेते हैं। सब कुछ व्यवस्थित लगता है – लेकिन समय बीतते ही वही अनदेखी बातें बड़ा जोखिम बन सकती हैं। सब कुछ व्यवस्थित लगता है - लेकिन ऐसे समय में हमारे भीतर की एक अदृश्य शक्ति – अंतर्ज्ञान – हमें चुपचाप चेतावनी देता है। कोई दस्तावेज़ नहीं, कोई

नोटिस नहीं... बस एक अहसास, एक अंदर की आवाज़ — जो कहती है, "रुको, एक बार और सोचो।"

समस्या यह है कि हम उस आवाज़ को अक्सर दबा देते हैं – क्योंकि वह तर्क नहीं देती, सिर्फ अहसास कराती है।

लेकिन आज के दौर में, जहाँ हर दिन कोई नई डिजिटल चालाकी सामने आती है, वहाँ अंतर्ज्ञान सिर्फ एक निजी गुण नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक ज़रूरत है।

संदेश साफ है:

भरोसा कीजिए – लेकिन सतर्क रहिए।

सुनिए – लेकिन आँख मूंदकर नहीं।

प्रक्रिया अपनाइए – लेकिन सोच-समझकर।

और सबसे ज़रूरी – अपने अंतर्ज्ञान की आवाज़ को कभी मत दबाइए

क्योंकि कभी-कभी वही एक चेतावनी – हमें उस एक फैसले से बचा सकती है।

एक गड्डे में गिरे दो मेंढकों को बाहर खड़े मेंढक लगातार कहते रहे कि तुम नहीं निकल पाओगे और हार मान लो। एक मेंढक ने उनकी बात सुनकर हार मान ली, लेकिन दूसरा मेंढक कूदता रहा और अंततः बाहर निकल आया।

सीख : नकारात्मक बातों पर ध्यान न दें और खुद पर पूरा विश्वास रखें। आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच से आप सफलता पा सकते हैं।





अंकित भारद्वाज
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय

आलेख

वित्तीय अनुशासित बनने की आवश्यकता

कम पैसों की चिंता के साथ जीवन जीना निश्चित रूप से संभव है, परंतु इसके लिए वित्तीय अनुशासन होना जरूरी है। अगर आप हर महीने कमाई, खर्च करने और फिर पैसे खत्म हो जाने के चक्र के आदी हैं, तो पैसे संभालने की आदत बनाना शुरू में कठिन लग सकती है - लेकिन यह किया जा सकता है। इसके लिए आप कुछ कदम उठा सकते हैं जो आपको पैसों के प्रति अनुशासित बनाएँगे और एक मजबूत एवं तनावमुक्त भविष्य देंगे।

अपनी मौजूदा स्थिति को समझें

सबसे पहले यह जानिए कि आपका पैसा कहाँ खर्च हो रहा है। अपने खर्च का पता लगाना शुरू करें - हर पैसे का - एक स्प्रेडशीट पर, एक नोटबुक में या किसी ऐप का उपयोग करके हिसाब रखना शुरू करें। आप अपने खर्च को आवास, मनोरंजन, किराने का सामान, बिल, बाहर भोजन और परिवहन जैसी श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं। कुछ हफ्तों में या एक महीने में आपको रुझान दिखने लगेंगे: क्या आप अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा रेस्टोरेंट में खाने पर उम्मीद से ज्यादा खर्च कर रहे हैं? क्या आप उन चीज़ों पर बहुत पैसा खर्च कर

रहे हैं जिनका आप इस्तेमाल नहीं करते, जैसे ऐप सब्सक्रिप्शन?

बजट बनाएँ

वित्तीय अनुशासन के लिए एक योजना (बजट) बनानी जरूरी है। अब जब आपको पता चल गया है कि पैसा कहाँ जा रहा है, तो तय करें कि आगे इसे कहाँ लगाना है। बजट बनाने का एक आसान तरीका 50/30/20 योजना का पालन करना है, जिसका अर्थ है अपनी आय का 50% जरूरतों (घर, बिल, किराने का सामान) पर, 30% इच्छाओं (मनोरंजन, छुट्टियाँ, बाहर भोजन, नेटफ्लिक्स) पर और 20% वित्तीय लक्ष्यों (बचत और ऋण चुकौती) पर खर्च करना। अपना बजट बनाने के लिए 50/30/20 योजना को एक सामान्य नियम के रूप में उपयोग करने पर विचार करें तथा प्रत्येक श्रेणी के लिए अपनी मासिक आय की एक निश्चित राशि आबंटित करें।

बचत और ऋण अदायगी को स्वचालित करें

यह बात बहुत सही है कि बचत और ऋण भुगतान को ऑटोमेट करना हमारे आर्थिक अनुशासन की दिशा में एक बहुत प्रभावी



कदम है। आइए इसे सरल और विस्तार से समझते हैं :

अक्सर हम सोचते हैं कि “इस महीने खर्च ज्यादा है, अगली बार बचा लेंगे” लेकिन सच यह है कि जब तक हम बचत को पहली प्राथमिकता नहीं बनाते तब तक महीने के अंत में पैसा बचता ही नहीं है। ऑटोमेशन का फायदा यह है कि आप खुद को



सोचने या बहाने बनाने का मौका ही नहीं देते। जैसे ही आपकी सैलरी या आमदनी आती है, बचत और ऋण की रकम अपने आप निकल जाती है। ऑटोमेशन से आप भूलते नहीं हैं और हर महीने बचत होती रहती है। लेट फीस या पेनल्टी से बच जाते हैं। पैसा अपने आप सही दिशा में जाता है - बिना तनाव या टेंशन के। जब ऋण कम होता है और बचत बढ़ती है तो आर्थिक आत्मविश्वास बढ़ता है। संक्षेप में कहें तो ऑटोमेशन आपके लिए एक “स्मार्ट दोस्त” की तरह है जो हर महीने बिना याद दिलाए आपकी आर्थिक सेहत का ध्यान रखता है। आप जितनी जल्दी यह आदत डालेंगे, उतनी जल्दी पैसों की चिंता कम होगी और बचत बढ़ेगी।

नया कर्ज लेने से बचें

“नया कर्ज लेने से बचना” एक बहुत महत्वपूर्ण आर्थिक आदत है, क्योंकि यहीं

आपके वित्तीय अनुशासन की असली परीक्षा होती है। अक्सर हम अचानक किसी चीज़ को देखकर खरीदने का मन बना लेते हैं- जैसे

ऑनलाइन सेल देखकर कपड़े, जूते, गैजेट या कोई महंगी आइटम खरीदना। ऐसे खर्च को “इंस्टेंट या इंपल्स खरीददारी” कहा जाता है। शुरुआत में यह छोटी-छोटी खरीद लगती है लेकिन धीरे-धीरे यह आदत

बन जाती है और हम जरूरत न होने पर भी खर्च करने लगते हैं। इस कारण महीने का बजट बिगड़ जाता है। अक्सर हम क्रेडिट कार्ड या उधार का इस्तेमाल करने लगते हैं। धीरे-धीरे कर्ज का बोझ बढ़ता जाता है और मन में हमेशा आर्थिक तनाव बना रहता है। हम कह सकते हैं कि कर्ज का जाल अचानक नहीं बनता - यह छोटी-छोटी अनियोजित खरीदों से शुरू होता है। अगर आप हर खरीददारी से पहले थोड़ा सोचने की आदत डाल लें और अपने बजट में थोड़ी स्वतन्त्रता रखें तो नया कर्ज लिये बिना भी आप सुखी और संतुलित जीवन जी सकते हैं।

अपने कर्ज पर नजर रखें

भले ही आपके कर्ज या कार्ड का भुगतान अपने आप हो रहा हो, फिर भी यह जानना जरूरी है कि आप पर कितना कर्ज बाकी है। हर 1 या 2 हफ्ते में एक बार अपने क्रेडिट कार्ड या ऋण का बकाया देखकर जाँचें। इससे





आपको पता रहेगा कि आप कितना ऋण चुका चुके हैं और कितना बाकी है। अगर आप चाहें तो हर महीने के पहले रविवार या किसी तय दिन को “ऋण समीक्षा दिवस” बना लें। उस दिन बस 10 मिनट अपने सभी भुगतान और बैलेंस की स्थिति देख लें। आप चाहें तो गूगल शीट या मोबाइल ऐप में ट्रैकिंग कर सकते हैं ताकि सब व्यवस्थित रहे। जब आप अपनी स्थिति जानते हैं तो फिजूल खर्च करने से बचते हैं और धीरे-धीरे कर्ज कम करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। इससे आप लेट फीस या पेनल्टी से बच जाते हैं। अगर कहीं ब्याज ज्यादा है तो उसे जल्दी चुकाने का फैसला कर सकते हैं। आप अनावश्यक खरीददारी से रुकते हैं क्योंकि आपको पता होता है कि अभी भुगतान बाकी है। धीरे-धीरे आपका कर्ज कम होता है और आर्थिक आज़ादी बढ़ती है।

धैर्य रखें:

पैसों की आदतें बदलने में समय लगता है। अगर बीच में गलती हो जाए तो निराश न हों। अपने लक्ष्य को याद करें- वित्तीय आज़ादी और बैंक बैलेंस का बढ़ना- और दुबारा सही रास्ते पर लौट आएं। आर्थिक अनुशासन अपनाना शुरू में मुश्किल लग सकता है लेकिन यह आपकी जिंदगी में शांति और आत्मविश्वास दोनों लाता है। अपना बजट और लक्ष्य नियमित रूप से देखें, यह याद रखें कि आप बदलाव क्यों चाहते हैं और लगातार आगे बढ़ते रहें। पैसों के प्रति

अनुशासन विकसित करना मेहनत का काम है- लेकिन इसका परिणाम बेफिक्र, सुरक्षित और मजबूत आर्थिक भविष्य है।

उपरोक्त बातों के अलावा आपके धन को दीर्घकालिक रूप से बढ़ाने के लिए मेरे पास कुछ सुझाव हैं:

1. समझदारी से निवेश करें (परिसंपत्तियों में निवेश)

ऐसी चीज़ों में पैसा लगाएँ जिनकी कीमत समय के साथ बढ़ती है, जैसे-जमीन, मकान या सोना। कार, मोबाइल या गैजेट जैसी चीज़ों की कीमत तो समय के साथ घट जाती है इसलिए इन पर ज़्यादा खर्च करने से बचें।

2. पैसों के समय के मूल्य को समझें

पहले लोग अपना पैसा लॉकर में रखते थे, लेकिन आज के समय में ऐसा करना ठीक नहीं है क्योंकि मुद्रास्फीति (महँगाई) के कारण समय के साथ पैसे का मूल्य घटता रहता है। मतलब- आज 100 रुपये में जो मिलता है, कुछ साल बाद उसके लिए 150 या 200 रुपये लगेंगे। अगर पैसा यूँ ही पड़ा रहेगा तो उसका मूल्य घटेगा लेकिन अगर आप उसे सोने या किसी निवेश में लगाएँगे, तो उसकी कीमत और मूल्य दोनों बढ़ते रहेंगे।

3. धन बढ़ाने के लिए समझदारी से ऋण लें

ज़्यादा ऋण लेना सही नहीं है, लेकिन अगर आप ऋण लेकर कोई संपत्ति बनाते हैं (जैसे मकान, ज़मीन या बिज़नेस में निवेश) तो यह भविष्य में फायदेमंद साबित होता है।





मान लीजिए आज ऋण चुकाना मुश्किल लग रहा है पर आने वाले 5 सालों में आपकी आय बढ़ेगी और पैसे का मूल्य घटेगा तो आपको वही किस्ते आसान लगने लगेंगी। ऋण पूरा होने तक आपकी बनाई संपत्ति की कीमत दोगुनी या उससे ज्यादा हो जाएगी।

4. धन सृजन का स्वर्ण नियम

कमाएँ → बचाएँ → निवेश करें → और इस प्रक्रिया को दोहराएँ।

हमेंशा अपनी कमाई से कम खर्च करें। हर महीने नियमित रूप से बचत करें और उस बचत को लंबी अवधि के निवेश में लगाएँ— जैसे म्यूचुअल फंड, सोना या अचल संपत्ति।

बिना जानकारी के किसी भी चीज़ में पैसा न लगाएँ और ज्यादा जोखिम वाले निवेशों से बचें।

कुदरत के दो रास्ते

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था। लोग मोलाभाव कर रहे थे। एक सज्जन ने उसके पैर देखे; उसे बहुत दुख हुआ। वह भागकर गया, पास ही की एक दुकान से बूट लेकर आया और बोला-“बेटा, बूट पहन ले।” बच्चे ने फटाफट बूट पहने, बड़ा खुश हुआ और उन सज्जन का हाथ पकड़ कर कहने लगा-“आप भगवान हो?” वह सज्जन घबरा गए और बोले-“नहीं...नहीं,,, बेटा! मैं भगवान नहीं हूँ।” फिर बच्चा बोला-“जरूर आप भगवान के दोस्त होंगे, क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान से प्रार्थना की थी कि भगवान जी, मेरे पैर बहुत जलते हैं। मुझे बूट लेकर दे दो। वह आदमी आँखों में पानी लिये मुसकुराता हुआ चला गया, पर वह जान गया था कि भगवान का दोस्त बनना ज्यादा मुश्किल नहीं है। कुदरत ने दो रास्ते बनाए हैं :-

- देकर जाओ या
- छोड़कर जाओ

साथ लेकर जाने की कोई व्यवस्था नहीं है |





सागर पीपावत
प्रबंधक
अंचल कार्यालय



बैंकिंग में साइबर जागरूकता : डिजिटल सुरक्षा की अनिवार्यता

आज का समय डिजिटल क्रांति का समय है। बैंकिंग सेवाएँ अब केवल शाखाओं तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि मोबाइल ऐप, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई और एटीएम जैसे अनेक माध्यमों तक फैल चुकी हैं। यह सुविधा ग्राहकों को समय, दूरी और प्रक्रिया-तीनों से मुक्त करती है। लेकिन इसी सुविधा के साथ एक नया खतरा भी बढ़ा है—साइबर अपराध।

साइबर अपराधी आज पहले से कहीं अधिक पेशेवर और योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय हैं। वे ग्राहकों को भ्रमित कर उनकी व्यक्तिगत जानकारी, बैंक विवरण या गोपनीय पासवर्ड हांसिल करने की कोशिश करते हैं। इसी कारण “साइबर जागरूकता” का महत्व अब हर बैंकिंग उपभोक्ता के जीवन का हिस्सा बन गया है।

साइबर अपराध क्या है

साइबर अपराध वह अवैध क्रिया है जो इंटरनेट या डिजिटल माध्यम का उपयोग कर

किसी व्यक्ति, संस्था या बैंक को आर्थिक या डेटा सुरक्षा की क्षति पहुँचाए। इसमें फ़िशिंग (फर्जी ईमेल या वेबसाइट के ज़रिए जानकारी चुराना), विशिंग (फोन कॉल के द्वारा व्यक्तिगत जानकारी माँगना), स्मिशिंग (एसएमएस के ज़रिए धोखाधड़ी) और कार्ड स्किमिंग (एटीएम पर डिवाइस लगाकर कार्ड डेटा चोरी करना) जैसी तकनीकें इस्तेमाल होती हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में साइबर खतरे

बैंकों में रोज़ाना करोड़ों रुपये के डिजिटल लेनदेन होते हैं। छोटे से डेटा लीक या गलत क्लिक से भारी नुकसान हो सकता है।

- नेट बैंकिंग या मोबाइल बैंकिंग पासवर्ड की चोरी।
- यूपीआई ऐप में फर्जी रिक्वेस्ट से पैसे ट्रांसफर होना।
- सोशल इंजीनियरिंग के ज़रिए ग्राहक को भ्रमित कर उसकी जानकारी प्राप्त करना।





• ई-मेल या वेबसाइट के माध्यम से मालवेयर डालकर सिस्टम को नुकसान पहुँचाना।

साइबर सुरक्षा में ग्राहक की भूमिका

बैंक अपने सिस्टम को सुरक्षित रखने के लिए कई स्तरों की तकनीकी सुरक्षा अपनाते हैं, लेकिन ग्राहक की सतर्कता इस सुरक्षा का सबसे अहम पहलू है।

• कभी भी किसी को ओटीपी, पिन, पासवर्ड या सीवीवी न बताएं।

• किसी भी लिंक या ऐप को डाउनलोड करने से पहले उसका स्रोत अवश्य जाँचें।

• बैंक की आधिकारिक वेबसाइट या मोबाइल ऐप का ही उपयोग करें।

• संदिग्ध कॉल या संदेश मिलने पर तुरंत बैंक को सूचित करें।

• पासवर्ड समय-समय पर बदलते रहें और जटिल पासवर्ड का प्रयोग करें।

बैंक कर्मचारियों के लिए साइबर जागरूकता

बैंक कर्मचारी ग्राहक डेटा और फंड ट्रांजेक्शन व्यवस्था के संरक्षक होते हैं। उनके लिए भी साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण आवश्यक है।

• केवल अधिकृत प्लेटफॉर्म पर कार्य करें।

• कस्टमर डिटेल्स कभी ईमेल या व्हाट्सएप के माध्यम से साझा न करें।

• नियमित साइबर ट्रेनिंग में भाग लें और नई तकनीकी अपडेट समझें।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से महत्व

भारत में डिजिटल लेन-देन तेजी से बढ़ रहा है। यूनिकाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) ने करोड़ों लोगों को ऑनलाइन भुगतान की सुविधा दी है। इसके साथ ही, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) और विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक समय-समय पर साइबर जागरूकता अभियान चलाते हैं— जैसे “RBI कहता है - सावधान रहें”। इन अभियानों का उद्देश्य आम

उपभोक्ता तक सुरक्षा के मुख्य संदेश पहुँचाना है।

निष्कर्ष

डिजिटल बैंकिंग जितनी सुविधाजनक है, उतनी ही सावधानी की मांग भी करती है। साइबर जागरूकता कोई एक-दिन का प्रयास

नहीं बल्कि सतत् प्रक्रिया है। जब हर ग्राहक, हर कर्मचारी और हर संस्था सतर्क होगी, तभी साइबर अपराधों पर अंकुश लगाया जा सकेगा।

जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनें, फर्जी लिंक या कॉल का शिकार न हों और हमेशा अपनी जानकारी सुरक्षित रखें। याद रखें - “आपकी जागरूकता ही आपकी सबसे बड़ी सुरक्षा है।”





चंद्रशेखर
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय

आलेख

डिजिटल बैंकिंग-एक नई क्रांति

डिजिटल बैंकिंग ने बैंकिंग के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाई है। अब बैंकिंग केवल फिजिकल शाखाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से बैंकिंग के हर काम को कहीं भी, कभी भी, तेजी से और सुरक्षित तरीके से किया जा सकता है। 2025 में डिजिटल बैंकिंग ने नए आयाम हासिल किए हैं और यह वित्तीय सेवाओं का भविष्य बनती जा रही है।

डिजिटल बैंकिंग क्या है?

डिजिटल बैंकिंग का मतलब है बैंकिंग सेवाओं का डिजिटलीकरण जिससे ग्राहक मोबाइल ऐप, इंटरनेट बैंकिंग, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से अपने बैंक खातों का प्रबंधन, पैसे का लेन-देन, बिल भुगतान, लोन आवेदन आदि कर सकते हैं। इसका उद्देश्य लाभार्थियों को बेहतर सुविधाएं देना, प्रोसेस को सरल बनाना और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना है।

2025 में डिजिटल बैंकिंग के नए ट्रेंड्स

- एआई और मशीन लर्निंग का उपयोग करके बैंकिंग सेवाएं और भी ज्यादा स्मार्ट और पर्सनलाइज़्ड हो गई हैं।
- डिजिटल वॉलेट्स और यूपीआई जैसी पेमेंट प्रणाली का तेजी से प्रसार हुआ है, खासकर युवा पीढ़ी में।
- ब्लॉकचेन और केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) से बैंकिंग की पारदर्शिता, सुरक्षा और लेन-देन की गति बढ़ी है।
- आरबीआई ने डिजिटल बैंकिंग को और सुरक्षित बनाने के लिए नए नियम प्रस्तावित किए हैं, जिनमें ग्राहक की स्पष्ट सहमति आवश्यक है और फ्राड डिटेक्शन को कड़ा किया गया है।

डिजिटल बैंकिंग के फायदे

- कहीं भी, कभी भी बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध
- ट्रांजैक्शन का त्वरित और सुरक्षित निपटान
- वित्तीय समावेशन में वृद्धि, खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में
- दस्तावेजी कार्यों में कटौती और ऑपरेशन में तेजी



- ग्राहक अनुभव में सुधार, अधिक सहज और यूजर-फ्रेंडली इंटरफेस

डिजिटल बैंकिंग का भविष्य

डिजिटल बैंकिंग का भविष्य बहुत प्रगतिशील नजर आता है। आने वाले समय में मोबाइल-फर्स्ट एक्सपीरियंस, ऑटोनॉमस फाइनेंस और अधिक कस्टमाइजेशन के साथ बैंकिंग अनुभव और भी सशक्त और मानव-संसर्गयुक्त होगा। ग्राहक अपनी जरूरतों के अनुसार सेवाएं चुन सकेंगे और बैंक भी अधिक डेटा-संचालित फैसले लेकर बेहतर सेवाएं देंगे।

डिजिटल बैंकिंग में हो रहे प्रमुख बदलाव

1. स्मार्टफोन और इंटरनेट के व्यापक उपयोग से बैंकिंग सेवाएं तेजी से बढ़ी हैं।
2. बैंकिंग एप्लिकेशन और यूजर इंटरफेस अधिक यूजर-फ्रेंडली बने हैं।
3. बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन जैसे फेसरिकग्निशन, फिंगरप्रिंट से सुरक्षा बढ़ाई गई है।
4. एआई और डेटा एनालिटिक्स के उपयोग से फ्रॉड की संभावना कम हुई है।
5. डिजिटलीकरण से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में बैंकिंग पहुंची है।

सरकारी और बैंक की पहल

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने के लिए अनेक पहलों की शुरुआत की है जैसे कि डिजिटल बैंकिंग यूनिट्स, केवाईसी (Know Your Customer) प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण, और डिजिटल पेमेंट इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करना। इसके अलावा, बैंकों ने भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भारी निवेश करके ग्राहकों को बेहतर सेवा देने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।



डिजिटल बैंकिंग से जुड़ी चुनौतियां

हालांकि डिजिटल बैंकिंग के कई फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं:

- साइबर सुरक्षा के खतरे बढ़े हैं, जिससे बैंकिंग डेटा की सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती है।
- तकनीकी कठिनाई और डिजिटल साक्षरता की कमी कुछ वर्गों के लिए समस्या है।
- इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी कुछ दूरदराज के इलाकों में डिजिटल बैंकिंग को बाधित करती है।

डिजिटल बैंकिंग की प्रमुख सेवाएं

- इंटरनेट बैंकिंग
- मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन





- ऑनलाइन फंड ट्रांसफर (NEFT, RTGS, IMPS)
- डिजिटल वॉलेट और यूपीआई (UPI) पेमेंट
- ऑनलाइन ऋण आवेदन और स्वीकृति
- निवेश सेवाएं और म्यूचुअल फंड डिपॉजिट

डिजिटल बैंकिंग की नई तकनीकें

- ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग बैंकिंग ट्रांजैक्शनों के लिए पारदर्शिता और सुरक्षा बढ़ाने में बढ़ रहा है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित चैटबॉट और ग्राहक सहायता 24x7 उपलब्ध हैं।
- क्लाउड कंप्यूटिंग से बैंकिंग डेटा का प्रबंधन सहज और लागत प्रभावी हो गया है।

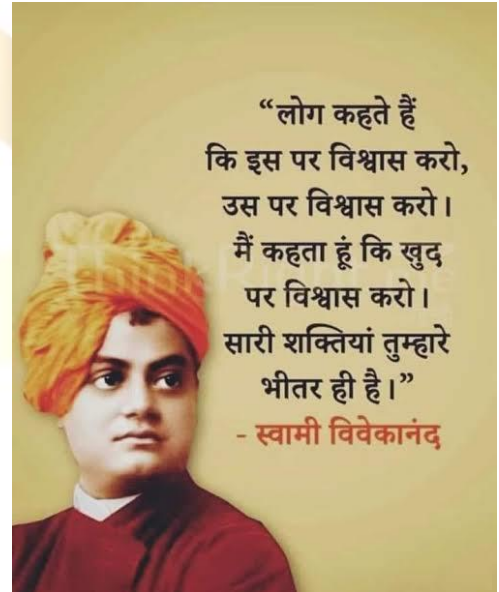
डिजिटल बैंकिंग के फायदे

- सुविधा: 24 घंटे, 7 दिन बैंकिंग सेवा
- गति: त्वरित ट्रांजैक्शन और सूचना का आदान-प्रदान
- लागत: कम प्रशासनिक और संचालन लागत
- पहुँच: अधिक से अधिक लोगों तक वित्तीय सेवाएं पहुँचना

- पारदर्शिता: ग्राहक अपने वित्तीय ट्रांजैक्शन पर नियंत्रण रखते हैं।

निष्कर्ष

डिजिटल बैंकिंग एक नई और प्रगतिशील दिशा है जो बैंकिंग को अधिक उपभोक्ता-केंद्रित, त्वरित और सुरक्षित बनाती है। यह न केवल तकनीकी उन्नति की मिसाल है बल्कि आर्थिक विकास और वित्तीय समावेशन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से भारतीय समाज के हर वर्ग को आधुनिक बैंकिंग सेवा उपलब्ध कराना संभव हो रहा है जो देश की आर्थिक प्रगति का आधार है। यह नई क्रांति बैंकिंग के हर पहलू को नया आकार दे रही है और आने वाले समय में इसके इस्तेमाल से वित्तीय लेनदेन और भी सरल, सुरक्षित और पारदर्शी हो जाएंगे।





अशोक कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय



बैंक में एटीएम व शाखाओं की सुरक्षा को सुदृढ करने में नवीन ई-सर्विलांस सिस्टम की उपयोगिता

बैंक के एटीएम व शाखाओं में हो रही चोरी, सेंधमारी, तोड़फोड़ व आग लगने की घटनाओं को रोकने के लिए प्रधान कार्यालय ने अपनी उच्च जोखिम वाली शाखाओं, सभी एटीएम और रिसाइकलर की सुरक्षा व्यवस्था की 24x7 निगरानी के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी युक्त ई-सर्विलांस सिस्टम लगवाने की पहल की है। प्रधान कार्यालय ने यह कार्य OPEX (परिचालन व्यय) मॉडल पर करने के लिए चयनित वेंडरों को दिया है, जो बैंक के सभी एटीएम, रिसाइकलर व उच्च जोखिम वाली शाखाओं में इस सिस्टम से 24 घंटे सातों दिन निगरानी करेंगे।

ई-सर्विलांस सिस्टम का कार्यसिद्धांत

यह एटीएम/शाखा में चोरी, तोड़फोड़ व आग लगने जैसी घटनाओं का समय पर पता लगाकर संबंधित शाखा प्रबंधक, पुलिस थाना,

फायर स्टेशन, अंचल सुरक्षा अधिकारी, बैंक के मुख्य सुरक्षा अधिकारी को सूचित करता है, ताकि अपराधिक घटना व दुर्घटना को समय रहते रोका जा सके।

ई-सर्विलांस में प्रयुक्त उपकरण व उनका कार्य-

हमारे हर एटीएम, रिसाइकलर व उच्च जोखिम वाली शाखा में इंटीग्रेटिड अलार्म सिस्टम स्थापित किए गए हैं, जो विभिन्न प्रकार के सेंसरों से लेस हैं, जैसे कि चुंबकीय संपर्क सेंसर, वाइब्रेशन सेंसर, टिल्ट सेंसर, स्मोक/हीट सेंसर, पैनिक स्विच, ग्लास ब्रेक सेंसर, रिमुवल सेंसर, आदि। साथ ही इन जगहों पर डीवीआर सहित सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। एटीएम कक्ष में दुतरफा संपर्क के लिए माईक व स्पीकर भी स्थापित किए गए हैं। इन सभी उपकरणों को हर समय चालू रखने के लिए अलग यूपीएस

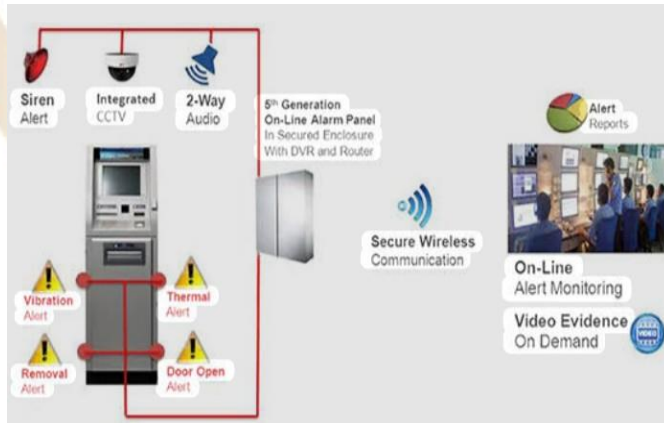




लगाया गया है। सभी उपकरणों की मॉनिटरिंग के लिए इन्हें जीएसएम राउटर के जरिए ई-सर्विलांस वेंडर के सेंट्रल मॉनिटरिंग स्टेशन से जोड़ा गया है, जहां 24x7 मॉनिटरिंग टीम रहती है।

अवांछित घटना या दुर्घटना होने की स्थिति में ई-सर्विलांस सिस्टम की कार्यप्रणाली-

यदि कोई व्यक्ति ई-सर्विलांस टीम की आज्ञा के बिना या सिस्टम को बाईपास किए बिना एटीएम कियोस्क की तिजोरी का बाहरी दरवाजा, कियोस्क का ऊपर का हूड खोलने या एटीएम कियोस्क को चोरी के इरादे से तोड़ने, काटने, हिलाने का प्रयास करता है, तो मशीन पर लगे सेंसर अलार्म सिस्टम को चालू कर देंगे और यदि इन सेंसरों को हटाने, तोड़ने का भी प्रयास करेगा तो अलार्म चालू हो जाएगा। यदि दुर्घटनावश एटीएम कक्ष/ शाखा परिसर में आग लगती है, तो भी कक्ष में लगे स्मोक सेंसर अलार्म चालू कर देंगे। अलार्म चालू होने की दशा में ई-सर्विलांस वेंडर का 24 घंटे कार्यरत सेंट्रल मॉनिटरिंग स्टेशन एटीएम कक्ष/ शाखा परिसर में लगे कैमरों की मदद से घटना की सत्यता की पुष्टि करेंगे और माईक व स्पीकर की मदद से एटीएम को नुकसान पहुंचाने वाले व्यक्ति से वार्ता कर घटना को रोकने का आदेश देंगे।



साथ ही अवांछित घटना या दुर्घटना की पुष्टि करने के बाद इसकी सूचना फोन पर संबंधित शाखा प्रबंधक, पुलिस थाना / फायर स्टेशन, अंचल सुरक्षा अधिकारी, बैंक के मुख्य सुरक्षा अधिकारी को देंगे। ऐसी ही कार्रवाई चोरी के इरादे से उच्च जोखिम वाली शाखाओं में संधमारी की घटना होने की स्थिति में भी होगी।

अपराध को घटित होने से रोकने के अलावा ई-सर्विलांस सिस्टम, एटीएम कक्ष/ शाखा में लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से एटीएम कक्ष/ शाखा में घटित हर घटना का फूटेज रखता है, जो एटीएम ट्रांजेक्शन फेल होने, ग्राहक की शिकायत की अवस्था हमारे काम आ सकती है, शाखाएँ वेंडर को संपर्क करके सीसीटीवी फूटेज प्राप्त कर सकती हैं।

ई-सर्विलांस वेंडर के सेंट्रल मॉनिटरिंग स्टेशन से फोन आने की स्थिति में शाखा प्रबंधक से अपेक्षित कार्य-

सेंट्रल मॉनिटरिंग स्टेशन को हमारे शाखा प्रमुखों के मोबाइल नंबर दिए गए हैं, ए.टी.एम./शाखा के खिलाफ अपराध के किसी भी प्रयास या आग के खतरे के मामले में सेंट्रल मॉनिटरिंग स्टेशन तत्काल सहायता के लिए प्रथम उत्तरदाता (शाखा प्रमुख) को फोन करेगा, इसलिए शाखा प्रमुख का फोन हमेशा





स्विच-ऑन मोड में और पहुंच के भीतर होना चाहिए, विशेष रूप से रात के समय क्योंकि ऐसी घटनाएँ प्रायः रात के समय होती हैं। शाखा प्रमुखों का दायित्व है कि वे ऐसी घटना की सूचना मिलने पर त्वरित कार्य करें ताकि अपराधी को बैंक की संपत्ति का नुकसान करने के लिए अतिरिक्त समय न मिले। इसलिए बेहतर होगा कि शाखा प्रमुख और सहायक शाखा प्रमुख के पास स्थानीय पुलिस बीट, पुलिस स्टेशन, फायर स्टेशन, शाखा/एटीएम साइट के करीब रहने वाले व्यक्ति (हमारे

कर्मचारी, मकान मालिक और भरोसेमंद व्यक्ति) से संपर्क होना चाहिए जो आवश्यकता पड़ने पर तुरंत सहायता दे सकते हैं और अपराध को रोकने के लिए त्वरित कार्य कर सकते हैं। अतः ई-सर्विलांस सिस्टम की सफलता इस बात पर निर्भर है कि हम हर समय विशेषकर रात्री में फोन पर उपलब्ध रहें और शाखा के पास रहने वाले भरोसेमंद व्यक्तियों से संपर्क रखें।

स्वच्छ भारत अभियान





अरुण मलिक
सहायक प्रबंधक
अंचल कार्यालय



पेरेंटिंग – एक अनुभव

पेरेंटिंग शब्द- असीम चीजें समेटे हुए बहुत ही सरल शब्द है। यह शब्द सरल भी है पर इसकी परिभाषा अनेक तरह की है।

यह एक अनुभव है जो हर किसी के जीवन से जुड़ा हुआ है, यह एक सफर है जिसकी मंजिल एक होते हुए भी हर किसी का सफर अलग होता है और मुझे लगता है कि पेरेंटिंग का सफर कभी खत्म नहीं होता क्योंकि मेरे लिए यह सफर सिर्फ 2 साल पहले शुरू हुआ है परंतु मेरे माता पिता के लिए यह सफर अभी भी जारी है। मुझे अभी भी याद है वो पल जब 2 साल पहले हॉस्पिटल में डॉक्टर ने मेरे बेटे को मेरी गोद में दिया था। वो अहसास, वो पल, वो खुशी शायद ही कोई शब्द ऐसा हो जो उस एहसास को व्यक्त कर सके और मुझे यकीन है कि मेरे माता पिता को भी वो सफर शुरू होने का पल याद होगा। मुझे नहीं लगता कि कोई वो पल अपनी जिंदगी का भूल सकता है।

यह सफर दो लोग एक साथ मिलकर शुरू करते हैं और इस सफर में दोनों का अलग-अलग योगदान रहता है, परंतु मुझे लगता है

कि पेरेंटिंग में एक पिता से ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका माता की होती है। एक जिम्मेदारी होते हुए भी यह अनुभव हमें अपने बचपन के समीप लेकर जाता है।

जैसे ही हम हॉस्पिटल से घर पहुंचते हैं तो कितने ही तरह की रसम शुरू हो जाती हैं। उसके बाद घरवाले बच्चे और उसकी मां की देखभाल में लग जाते हैं। कई मेहमान भी घर आते हैं और घर में सभी सिर्फ छोटे मेहमान की देख-रेख में लग जाते हैं और इसी के साथ शुरू होता है बच्चे के नामकरण का सिलसिला- जिसमें हर कोई अपनी पसंद का नाम सुझाता है और आखिकार काफी सोच समझने के बाद नाम फाइनल हो जाता है। इस नामकरण और मेहमानों के आवागमन में पहला महीना निकल जाता है। शुरू-शुरू में बच्चे को थोड़े-थोड़े समय में दूध भी पिलाना होता है और काफी जल्दी-जल्दी उसके डाइपर भी बदलने होते हैं। इस समय में न तो मेरी नींद पूरी हो पाती थी और न ही मेरी पत्नी की। हम दोनों ही अपने बच्चे के लिए रात में उठते थे। उस समय मैं अधूरी नींद में ही ऑफिस जाता था। शुरू के 6





महीने तो नींद ही पूरी नहीं होती थी और बहुत थकान महसूस होती थी परंतु इन्हीं 6 महीनों में बच्चा अलग-अलग चीजें शुरू कर देता है; जैसे कि वो मुस्कुराना शुरू कर देता, आपको पहचानने लगता है और आपकी बातें भी समझने लगता है। ऑफिस की थकान और अधूरी नींद सब खत्म हो जाती है जब आप घर आकार अपने बच्चे को हँसते हुए देखते हो।

जैसे ही 6 महीने समाप्त हुए, मेरे बेटे ने थोड़ा ज्यादा सोना शुरू



कर दिया जिससे मेरी नींद भी पूरी होने लगी। शुरू के 6 महीने बच्चे की काफी देखभाल करनी पड़ती है उसकी वैक्सीनेशन होती है, दवाई होती है और एक समस्या जो ज्यादातर बच्चों को होती है वो है गैस की समस्या, जिसकी वजह से बच्चे काफी परेशान हो जाते हैं। इसकी दवाई मैं हमेशा अपने बिस्तर की साइड टेबल पर रखता था। ऐसी छोटी-मोटी समस्या से बचते हुए 6 महीने पूरे होने पर मेरे बेटे ने घुटनों के बल चलना शुरू कर दिया। हम सबको लगता है कि बच्चे जल्दी से जल्दी चलना शुरू कर दें मैं भी यही चाहता था। परंतु जैसे ही बच्चा चलना शुरू करता है तो माता-पिता के लिए नई परीक्षा शुरू हो जाती है। अब आपको पूरा

घर बच्चे की नजर से देखना है और ये सुनिश्चित करना है कि उसको कोई चोट न लगे। मुझे लगता है कि यह बहुत बड़ा काम है क्योंकि यह मेरे बेटा ने मेरी उम्मीद से काफी अधिक किया। मुझे जहां-जहां लगता था कि मेरा बेटा यहां नहीं पहुंचेगा उसने उन सब जगह पहुंचकर मुझे गलत साबित किया। मैंने घर के सभी स्थानों को बच्चे के लिए

सुरक्षित बनाया लेकिन फिर भी वो ऐसी जगह ढूँढ लेता था जो उसके लिए सुरक्षित नहीं थी।

ऐसे करते हुए मेरा बेटा डेढ़ साल का हो गया। उसकी नई-नई

हरकतों ने हमें हंसाया भी, डराया भी, चौंकाया भी और हर एक बात में एक नया अनुभव भी दिया। पैरेंटिंग का हर एक पल आपको याद रहता है चाहे वो पहली बार बच्चे को गोद में लेना हो या उसका पहली बार आपकी तरफ देखकर मुस्कुराना हो, पहली बार घुटनों के बल चलना हो, पहली बार खुद अपने पैरों पर चलना हो, आपको पहली बार पापा कहना हो- ये सभी पल आपको अंदर से खुशी देते हैं और मुझे लगता है कि इन्हीं छोटे-छोटे पलों में शामिल होना तथा उस वक्त अपने बच्चे के साथ मौजूद रहना ही पैरेंटिंग है।





दीप्ता पोरस
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय



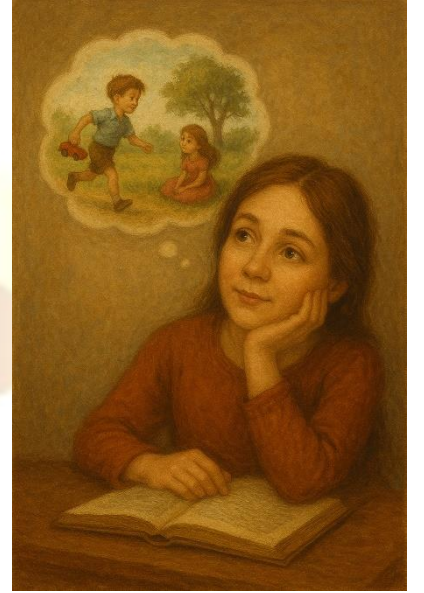
काश!

बचपन की बारिश अपनी कागज़ की नाव, हम सबकी मीठी यादों का हिस्सा हैं,
फिर बच्चे हो जाएं, सबकी चाहत का किस्सा है।
आज फिर किसी ने बोला, दिल से चाहो तो मिलता है
जानती हूँ ऐसा होता नहीं, बीता वक्त कब वापस मिलता है।

अगर खाहिशें पूरी हों, तो मुझे नहीं-
और सबको अपना बचपन जरूर मिले।
पर एक काश ! मुझे भी बहुत तंग करता है,
एक ख्याल बस सच हो जाए, दिल करता है ।

कुछ दिन उसके बचपन के, कहीं से भी वापस ले आऊँ,
वो जो जाते हुए कई बार मूडकर नहीं देखा, अब वो सुधार पाऊँ ।
मालूम है, सब जानती हूँ के गुमान में मुझसे,
कुछ नन्ही खुशियाँ, कुछ उदासी, जो समझने से छूट गईं,
उनको बस एक बार पढ़ने को दिल करता है।
सब बातों को बस सुलझाने, निबटाने की गलती तो हुई हैं मुझसे,
पर इस बार कुछ भी हल नहीं करना है, बस दिल करता है।

ये करेंगे, वो करेंगे के ढेरों अधूरे वादे हैं,
उन वादों को, कुछ बातों को पूरा करना है।
कुछ माफी मेरी तरफ छुटी हुई है,
उसे बाहों में भरकर माफी लेनी है, फिर से झगड़ा सुनना है।
पर जानती हूँ ऐसा होगा नहीं, बीता वक्त कब किसे मिलना है।





विनित कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
मुजफ्फराबाद शाखा

कहानी

मिथ्या या सत्य

ललित, 35 वर्षीय एक युवक, एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत, मेरठ के एक छोटे से गाँव से ताल्लुक रखता था लेकिन काम के सिलसिले में अक्सर दूर-सुदूर रोज़ के दौरे पर रहता था। एक बार काम के सिलसिले में ही कर्नाटक के किसी गाँव के दौरे पर निकाला। क्षेत्रीय दौरे के दौरान एक ऐसे गाँव में पहुँचा जहाँ न उसके रुकने की व्यवस्था हो पा रही थी और न ही खाने-पीने का कोई प्रबंध। इसी गाँव से लगभग 20 कि. मी. दूर किसी कस्बे में सभी व्यवस्था उपलब्ध थी परंतु गाँव से निकलते-निकलते चारों ओर अंधेरा छा चुका था और ललित के उस कस्बे तक पहुँचने के साधन की उपलब्धता समाप्त हो चुकी थी।

किसी तरह ललित ने पैदल ही चल देने का निर्णय लिया लेकिन रास्ते में बारिश और जंगल के बीच घने अंधेरे ने ललित के सफर को और मुश्किल कर दिया था। भूख और प्यास के कारण ललित की हालत और खराब होती जा रही थी और अब वह कहीं रुक कर आराम करना चाहता था, परंतु उस रास्ते में न कहीं होटल था और न ही कोई धर्मशाला।

ललित अब पूरी तरह थक कर बैठ चुका था। तभी कहीं से एक छोटी बच्ची ललित को दिखाई

दी और ललित को उसे देखकर लगा कि कहीं आस-पास ही कोई गाँव या कस्बा है। ललित उसके पीछे-पीछे चल दिया। चलते-चलते ललित को दूर एक झोपड़ी दिखाई दी। वह छोटी बच्ची वहाँ चली गई और ललित भी उसके पीछे-पीछे उस झोपड़ी में चला गया जहाँ उस बच्ची के साथ उसकी माँ भी थी। वो दोनों ललित को देखकर पूरे हालात समझ गईं। उस भली महिला ने ललित को खाने को दो सूखी रोटियाँ दीं और साथ ही पीने का पानी, जिसे खाकर न केवल ललित की भूख-प्यास मिटी बल्कि आगे के सफर के लिए वह साहस भी जुटा पाया। खराब मौसम और घने अंधेरे की वजह से इस भले परिवार ने ललित को वहीं रुकने को कहा और सुबह होने पर ही सफर जारी करने को कहा। ललित ने भी अपनी हालत और मौसम को देखते हुए यही सही समझा और वह उसी झोपड़ी में सो गया। सुबह आँख खुलते ही ललित ने खुद को तरो-ताजा महसूस किया और उस बच्ची और उसकी माँ का धन्यवाद देने चला, परंतु वे दोनों ही वहाँ नहीं थीं। ललित ने कुछ देर वहीं बैठकर उनका इंतजार किया परंतु वहाँ कोई नहीं आया। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद ललित ने वहाँ से जाने का निश्चय किया परंतु उस परिवार को धन्यवाद न दे पाने की टीस उसके दिल में थी, खासकर उस



बच्ची के प्रति वह बहुत आभार महसूस कर रहा था जो अचानक से न जाने कहाँ से आकर उसे इतनी राहत दे गई।

ऐसी स्थिति में ललित कुछ नहीं कर सकता था और वह अपने आगे के सफर पर चल दिया। आगे चलते-चलते ललित को गाँव के कुछ लोग दिखाई दिए जिन्हें ललित ने रात की उस घटना के बारे में बताया जिसे सुनकर उन लोगों के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे और उन्होंने ललित को बताया कि वह एक वीरान झोपड़ी है और वहाँ पिछले दस सालों से कोई नहीं रहता।

उन लोगों ने बताया कि जिस परिवार की ललित बात बता रहा है वह दस साल पहले ही खत्म हो चुका था और वह बच्ची झुमरी थी। झुमरी के पिता नहीं थे और माँ अक्सर बीमार रहती थी। झुमरी जगह-जगह से खाना मांगकर किसी तरह अपना और अपनी माँ का पेट भर पाती। कुछ लोग खाना देते थे और बहुत से अपनी झूठन भी नहीं देते थे और दुत्कार कर भगा देते थे। एक दिन इन्हीं हालातों से जूझते हुए झुमरी और उसकी माँ ने दम तोड़ दिया। यह सुनकर ललित की आँखों में आँसू थे और मन ही मन वह यह सोचकर दुखी था कि काश वह उन लोगों के लिए

कुछ कर सकता और उसने यह प्रण लिया कि वह जरूरतमंदों की हर संभव सहायता करेगा।

यह कहानी सिर्फ यहीं खत्म नहीं होती। यह कहानी सिर्फ झुमरी या उसकी माँ की ही नहीं बल्कि उन लाखों लोगों की है जिन्हें पर्याप्त खाना नहीं मिल पाता और बहुत से लोग कुपोषण का शिकार हो जाते हैं और बहुत से मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 की रिपोर्ट के अनुसार भारत 123 देशों की सूची में 102वें पायदान पर है। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत का लगभग एक तिहाई भोजन तैयार होने से पहले ही बर्बाद हो जाता है और हम भारतीय सालाना 6.88 करोड़ टन भोजन घरों में बर्बाद कर देते हैं। यदि इतना भोजन बर्बाद ना हो तो बहुत से जरूरतमंदों को सही दामों पर खाद्य सामाग्री उपलब्ध हो सकती है और फिर किसी झुमरी की इस वजह से मृत्यु नहीं होगी।

ललित को यह बात समझ आ गई, आप भी ज़रा सोचिए।





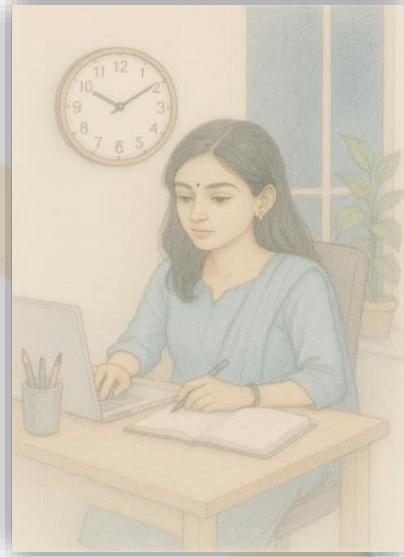
अल्पना शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
केनरा बैंक
गंगानगर शाखा

कहानी

दृष्टिकोण

श्वेता ने नजर उठाकर घड़ी की तरफ देखा। रात के 7:30 बज चुके थे, पर वह अब भी दफ्तर में ही बैठी थी। पिछला एक हफ्ता काम के बोझ में कुछ ऐसा ही बीता था- कभी 8 बजते तो कभी 8:30। काम ही इतना बढ़ गया था कि उसे कभी-कभी खुद से यह सवाल करना पड़ता था कि आखिर उसने यह नौकरी की ही क्यों। रोज बे-मन से दफ्तर आना और लोगों की बातें सुनना। उसकी यह झल्लाहट कभी काम पर, कभी ग्राहकों पर तो कभी सहकर्मियों पर निकल जाती थी। नौकरी करना अपनेआप में जैसे एक बोझ बन गया था। पढ़ाई पूरी होते ही सरकारी नौकरी की दौड़ में सबकी तरह उसने भी बैंक की तैयारी शुरू कर दी थी। प्रक्रिया में पारदर्शिता और जल्दी ज्वाइनिंग के कारण कितने ही विद्यार्थी बैंक के फार्म निकलने के इंतजार में रहते थे। दो साल की कड़ी मेहनत के बाद जब उसकी नौकरी लगी तो सोचा था कि अब बाकी

का जीवन सुख-चैन से गुजारेगा। पर अब तो वह रोज ही तनाव में घिरी रहती थी।



“मैडम, आज घर नहीं जाना क्या, 8 बजने को हैं?” राकेश सर ने केबिन से आवाज लगाई।

“जी सर, चलते हैं, बाकी कल देखेंगे” कहकर उसने कलम बंद कर दी।

गाड़ी चलाते वक्त भी वह दफ्तर की भीड़ और उसकी फाइलों में ही डूबी थी। सोच रही थी, उसे शायद नौकरी

छोड़ कुछ और कर लेना चाहिए। आखिर ऐसा क्या है इस नौकरी में, न तो ठीक से पैसे ही मिल पाते हैं और फिर काम का बोझ। इतना तो, कितने ही लोग घर बैठे ऑनलाइन कमा लेते हैं, वो भी कुछ कर लेगी और चैन की नींद सोएगी।

घर पहुँच कर देखा, माँ उसके इंतजार में दरवाज़े पर ही खड़ी थीं। उसने गाड़ी खड़ी की



और बिना कुछ बोले कमरे में जाकर बैग एक तरफ फेंककर लेट गई। थोड़ी देर में माँ पानी का गिलास लेकर आई।

"काम आज भी ज्यादा था क्या?"

"काम तो होता ही है माँ। नौकरी चीज़ ही ऐसी है, रोज-रोज की माथापच्ची।"

माँ पानी का गिलास पास की टेबल पर रखकर बेड के एक कोने पर टेका लगा कर खड़ी हो गई।

"पता है, आज कजली की माँ आई थी।"

"क्यूँ?"

"कह रही थी, कजली अब काम नहीं करना चाहती। कहती है घरों में चौका-बर्तन नहीं करूंगी। देख तो बिट्टो जरा-सी लड़की के नखरे।"

श्वेता ने आँखें बंद करके हाथ माथे पर टिका लिया। माँ शायद लंबी कहानी सुनाने वाली थीं, पर वो बेहद थकी हुई थी।

"तुझे याद है जब यह कजली पहली बार हमसे काम माँगने आई थी तो उस चिलचिलाती धूप में नंगे पैर थी। मैंने तुरंत ही तेरी एक जोड़ी चप्पल उसे दी थीं। बैठकर पानी पिलाया था, फिर बात पूछी थी। तब याद है, इनके घर के क्या हालात थे। अगले समय के खाने का पता नहीं था। माँ बीमार पड़ी थी, पिता के पास काम नहीं था। मकान

मालिक तकादा करने को रोज दरवाज़े पर खड़ा रहता था। मुझसे कहा था, "आंटी कोई भी काम बता दो, मैं सब कर लूँगी।"

श्वेता ने बस हंकारा भर दिया और माँ अपने ध्यान में आगे बोलती गई।

"अब देख इसे। वही काम अब बुरा लगने लगा है। महीना पूरा होते-होते अपनी सारी तनखाह तो यह मुझसे मांगकर खर्च कर देती है और अंत में 1000-1500 देखकर दुखी होती है। यह भूल गई है कि इन्हीं पैसों से इसका घर चलता है"। श्वेता तब भी चुप लेटी रही।

"पता है बिट्टो! जब नौकरी नई-नई लगती है तो उसकी कद्र होती है। उस समय पैसों की जरूरत होती है, काम की जरूरत होती है। फिर धीरे-धीरे पैसों की आदत हो जाती है और वहीं काम बुरा लगने लगता है। उस समय यह याद करना चाहिए कि हमने नौकरी कितने जतन से पाई थी। इस नौकरी से पहले हम कैसे थे। अब सोचकर देख, कितनी ही कजली जैसी





लड़कियां काम के लिए तैयार बैठी होंगी। मुझे क्या है, मैं तो कोई और ढूँढ लाऊँगी। यहाँ थी तो मैं थोड़ा-बहुत पढ़ा देती थी। अब पूरे दिन घर में पड़े-पड़े रील बनाएगी। थोड़े दिन में समझ तो जाएगी, पर तब तक अपना ही नुकसान कर लेगी। यह सब ना बिट्टो, दृष्टिकोण का खेल है। जल्दी से समझ नहीं आता।“

श्वेता को लगा जैसे किसी ने ठंडे पानी से भरी बाल्टी उस पर ला कर डाल दी हो।

अगले दिन वो बदली हुई सोच के साथ दफ्तर पहुँची। माँ की कही बातें पूरे दिन उसके साथ रहीं। पता नहीं उसकी सोच थी या सच में ही उस दिन उसके झगड़े भी कम हुए और लगा जैसे उसके साथ-साथ और लोगों के व्यवहार

में भी बदलाव आया है। कम तनाव और कम झल्लाहट से किया गया काम जल्दी निबट भी गया। उस दिन काफी समय बाद वो 6:30 बजे ही घर पहुँच गई तो माँ भी हैरान थीं। पर वो कुछ बोली नहीं बस उसके चेहरे को देखकर हल्का-सा मुस्करा दीं।

“माँ! आप बैठो, आज चाय मैं बनाती हूँ।“ उसने कपड़े बदलते हुए कहा।

“अच्छा। बना ले” कहकर माँ ने अखबार खोल लिया।

जब वो चाय लेकर आई तो धीरे से माँ ने कहा- “बिट्टो, आज सुबह कजली काम पर वापस आ गई। शायद उसका भी दृष्टिकोण बदल गया।

यह कहानी यूको बैंक अंचल कार्यालय मेरठ द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मेरठ के तत्वावधान में आयोजित कहानी लिखो प्रतियोगिता के अंतर्गत केनरा बैंक से प्राप्त हुई थी, जिसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था ।





सुरभि शर्मा

सहायक प्रबंधक

जैन डिग्री कॉलेज रोड, सहारनपुर

कहानी

सशक्त नारी : आत्मनिर्भर भारत

गाँव देवीपुरा की महिलाएं हमेशा से घर की चारदीवारी में ही सीमित रहीं। खेतों में काम करतीं, घर संभालतीं पर मेहनत का जिक्र कभी आता ही नहीं था। कमाई और पहचान केवल पुरुषों के हिस्से में आती।

सावित्री उसी गाँव की एक मेहनती व स्वाभिमानी स्त्री थी। वह आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार से होने के कारण जीवन संघर्षमयी रूप से व्यतीत कर रही

थी। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने पति का सहारा बनाना चाहती थी किन्तु ज्यादा पढ़ी-लिखी न होने के कारण बहुत विकल्प उसके पास नहीं थे।

एक दिन सावित्री ने आँगन में बैठी महिलाओं से कहा - “बहनों, कब तक हम दूसरों पर निर्भर रहेंगे ? क्यों न हम कुछ खुद करें?”



शुरू में सब चुप रहीं। कोई बोली - “हमसे क्या होगा? हमारे पास पूंजी नहीं, पढ़ाई नहीं।”

लेकिन सावित्री डटी रही - “पूंजी हम इकट्ठा कर लेंगे, हुनर तो हमारे पास है। हम

अचार बना सकते हैं, पापड़, बुनाई, सिलाई..... बस जरूरत है मिलकर काम करने की। धीरे-धीरे महिलाओं का हौसला बढ़ा। दस महिलाएं एकत्रित हुईं और उन्होंने ‘सखी

समूह’ बनाया, जिसका नाम ‘दुर्गा सखी समूह’ रखा गया। शुरुआत में उन्होंने घर से थोड़े-थोड़े पैसे जमा किए और मिलकर पापड़-अचार बनाने लगीं। लेकिन सबसे बड़ी समस्या थी- पैसे लेने-देने और ग्राहकों तक पहुंचाने की।

तभी गाँव में डिजिटल बैंकिंग की ट्रेनिंग आई। प्रशिक्षक ने उन्हें मोबाइल पर पेमेंट करना सिखाया। महिलाओं को पहले डर लगा, पर



जब पहली बार मोबाइल पर “पैसे प्राप्त हुए” का संदेश आया तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अब उन्हें किसी साहूकार की जरूरत नहीं थी। जो भी सामान खरीदता, सीधे मोबाइल से भुगतान कर देता। उनका छोटा-सा कारोबार धीरे-धीरे फैलने लगा। धीरे-धीरे उनसे प्रेरित होकर गाँव की बाकी महिलाओं ने भी अपने-अपने हुनर के अनुसार वस्तुएँ बना कर बेचने लगीं। सभी महिलाएं मिलकर गाँव के हाट में दुकानें लगाने लगीं। सावित्री ने भी अपने समूह की महिलाओं के साथ मिलकर स्टॉल लगाया- “दुर्गा सखी समूह - घर का स्वाद”। लोग दूर-दूर से उनके अचार, पापड़ और बुनाई की चीज़े खरीदने लगे।

खरीददारों ने जब देखा कि ये महिलाएं क्यूआर व मोबाइल के माध्यम से पेमेंट ले

रही हैं तो सब चकित रह गए। बोले- “अब तो ये महिलाएं भी शहर वालों से कम नहीं हैं। धीरे-धीरे उनका काम इतना बढ़ गया कि उन्होंने ऑनलाइन ऑर्डर लेना शुरू कर दिया। मोबाइल और डिजिटल बैंकिंग ने उन्हें पंख दिए। अब देवीपुरा की महिलाएं सिर्फ गृहिणी नहीं, बल्कि उद्यमी बन चुकी थीं। गाँव की लड़कियां उनसे प्रेरित होकर कहने लगीं - “हम भी पढ़-लिखकर अपना कारोबार करेंगे।”

सावित्री मुस्कुरा उठी, बोली - “पहचान हमें कोई देगा नहीं, हमें खुद बनानी होगी और हम सबने यह कर दिखाया है।” सावित्री न सिर्फ खुद आत्मनिर्भर बनी, अपितु हर स्त्री को उसने सशक्त होने की राह दिखाई।

टिप्पणी

- | | |
|----------------------------------|------------------------------|
| 1. Do the needful | आवश्यक कार्रवाई करें |
| 2. Expedite action | शीघ्र कार्रवाई करें |
| 3. Give details | विवरण प्रस्तुत करें |
| 4. Inter alia | अन्य बातों के साथ-साथ |
| 5. Issue circular | परिपत्र जारी करें |
| 6. It is admissible | यह स्वीकार्य है |
| 7. May be permitted | अनुमति दी जाए |
| 8. On perusal of the application | आवेदन पत्र का अवलोकन करने पर |
| 9. Prior approval | पूर्वानुमोदन |
| 10. Sanctioned | संस्वीकृत |





कवर पृष्ठ का संक्षिप्त विवरण :

हस्तिनापुर - इतिहास, संस्कृति और महाभारत का केंद्र

भारत की प्राचीन सभ्यता और इतिहास के पन्नों में हस्तिनापुर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल कुरु वंश की राजधानी था, बल्कि महाभारत जैसे महाकाव्य का केंद्र भी रहा है। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित यह ऐतिहासिक नगर आज भी अपने गौरवशाली अतीत की गाथा सुनाता है।

इतिहास और पौराणिक महत्व

हस्तिनापुर का नाम "हस्ति" (हाथी) से जुड़ा माना जाता है, जिसका अर्थ है हाथियों का नगर या ऐसा शहर जहाँ शाही सेना और राजसी शक्ति का केंद्र रहा हो। महाभारत के अनुसार, हस्तिनापुर की स्थापना राजा हस्ति ने की थी। यहीं से कुरु वंश का विस्तार हुआ और भीष्म, धृतराष्ट्र, पांडु, दुर्योधन, अर्जुन जैसे प्रमुख पात्रों ने शासन, शिक्षा और धर्म का पालन किया।

महाभारत का हस्तिनापुर

महाभारत में हस्तिनापुर केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक मूल्य-आधारित संस्कृति और राजनीति का प्रतीक है। यहीं पर यह संघर्ष हुआ—न्याय और अन्याय के बीच, जो अंततः कुरुक्षेत्र के युद्ध में परिणत हुआ।

पुरातात्विक महत्व

पुरातत्व विभाग द्वारा की गई खुदाइयों में हस्तिनापुर से मिले अवशेष उसके वैभव और प्राचीनता की पुष्टि करते हैं। यहाँ मिले मिट्टी के बर्तन, ईंटों के ढाँचे, सिक्के और मूर्तियाँ बताते हैं कि यह क्षेत्र एक उन्नत शहर रहा होगा। हस्तिनापुर को कालीबंगन और हड़प्पा सभ्यता की संस्कृति से भी जोड़ा जाता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

हस्तिनापुर जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी अत्यंत पवित्र स्थान है। यह भगवान महावीर से पूर्व के कई जैन तीर्थंकरों का जन्म स्थान माना जाता है। यहाँ स्थित जैन मंदिरों और स्तंभों पर प्राचीन शिलालेख भी मिलते हैं।

वर्तमान हस्तिनापुर

आज हस्तिनापुर एक छोटा कस्बा है, लेकिन उसका ऐतिहासिक आकर्षण और धार्मिक महत्ता उसे विशेष बनाती है। यहाँ स्थित पांडव टीला, कौरव टीला, विदुर कुंड, भीम की गदा और जैन मंदिर पर्यटकों के प्रमुख स्थल हैं। देशभर से लोग यहाँ आते हैं और प्राचीन भारत की गाथाओं को महसूस करते हैं।





शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक



दिनांक 17 मई, 2025 तथा 07 अगस्त, 2025 को मेरठ में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में श्री अंबिकानंद झा, महाप्रबंधक (कारोबार विकास), दिल्ली ने सभी व्यावसायिक पैरामीटरों पर विस्तृत चर्चा करते हुए समीक्षा की। इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री जावेद ने शाखा प्रबंधकों को टीम के साथ मिलकर ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण तथा समयबद्ध कार्यप्रणाली पर फोकस करने को कहा। उन्होंने डिजिटल सेवाओं के अधिकतम उपयोग, शिकायतों के त्वरित निपटान तथा गुणवत्तापूर्ण ऋण वितरण को प्राथमिकता बनाने पर बल दिया।



एम.एस.एम.ई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवॉल

जून तथा सितंबर, 2025 तिमाही में मेरठ अंचल द्वारा मेरठ, मुरादाबाद, अलीगढ़, बरेली, सहारनपुर तथा मथुरा जिलों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों तथा कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्राहक संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्योगों एवं कृषि को बढ़ावा देने के लिए बैंक की विभिन्न योजनाओं के बारे में ग्राहकों को पावर प्वाइंट के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी गई।

इन संगोष्ठियों में प्रधान कार्यालय के फ्लेगशिप कारपोरेट क्रेडिट विभाग से पधारे महाप्रबंधक श्री सुजाँय दत्ता ने ग्राहकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया। अंचल प्रमुख श्री जावेद ने ग्राहकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा बैंक अपने सभी ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर ऋण स्वीकृति पत्रों का वितरण भी किया गया।





राष्ट्रीय लोक अदालत



वित्तीय वर्ष 2025-26 में दिनांक 10 मई तथा 13 सितंबर को आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालतों में अंचल की शाखाओं द्वारा ऋण वसूली मामलों में एकमुश्त समझौते के अंतर्गत क्रमशः रु.1.70 करोड़ तथा रु.2.40 करोड़ की राशि के ऋणों का निपटारा किया गया।



बच्चों का बगीचा



अध्विक गुप्ता पुत्र श्रीमती सीमा कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक,
अंचल कार्यालय मेरठ



दर्शिका पुत्री श्री शिव कुमार, वरिष्ठ
प्रबंधक, अंचल कार्यालय मेरठ



वान्या सिंह पुत्री श्री विनीत कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक,
मुजफ्फराबाद शाखा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), मेरठ में हमारी सहभागिता

नराकास (बैंक एवं बीमा), मेरठ की छमाही बैठक दिनांक 21.05.2025 को श्री बी. वेंकट रामुलु, उप महाप्रबंधक केनरा बैंक नराकास (बैंक व बीमा), मेरठ की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अधीन उत्तरी क्षेत्र-2, गाजियाबाद उप-निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. छबिल कुमार मेहेर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय के महाप्रबंधक श्री कुलदीप सिंह राणा विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे।



बैठक में यूको बैंक, अंचल कार्यालय मेरठ द्वारा किए गए विभिन्न नवोन्मेषी कार्यों की पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुति दी गई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान श्रेष्ठ कार्य करने के उपलक्ष्य में यूको बैंक को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।



अंचल कार्यालय मेरठ द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व बीमा) मेरठ के तत्वावधान में “कहानी लिखो प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया था जिसके विजेताओं को भी बैठक में पुरस्कृत किया गया।

श्री अभिषेक, वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय को इण्डियन ओवरसीज़ बैंक द्वारा आयोजित “हिन्दी मुहावरे व लोकोक्ति प्रतियोगिता” में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ तथा श्री संदीप हुड्डा को सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित “हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता” में प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा अलीगढ़ शाखा (0225) का निरीक्षण



संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा दिनांक 10.06.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीगढ़ के अध्यक्ष तथा कुछ सदस्य कार्यालयों का नई दिल्ली में राजभाषायी निरीक्षण किया गया।

नराकास अलीगढ़-कार्यालय, प्रधान आयकर आयुक्त के अंतर्गत हमारी अलीगढ़ शाखा (0225) का निरीक्षण किया गया। बैठक में श्री आशुतोष सिंह (शाखा प्रमुख - अलीगढ़ शाखा) तथा श्रीमती प्रतिभा रतन (वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा) ने यूको बैंक का प्रतिनिधित्व किया।

समिति द्वारा हमारी अलीगढ़ शाखा में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की सराहना की गई।



अंचल में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

अंचल कार्यालय तथा अंचल के नियंत्रणाधीन सभी शाखाओं में दिनांक 15 से 29 सितंबर, 2025 तक हर्षोल्लास से हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सभी स्टाफ सदस्यों ने यूको राजभाषा प्रतिज्ञा से की। अंचल में अधिकारियों तथा कर्मचारियों हेतु पत्र लेखन / कार्यालय आदेश लेखन, चित्र देखो कहानी लिखो (ऑनलाइन), हिंदी तथा सामान्य बैंकिंग ज्ञान, आशुभाषण प्रतियोगिता तथा निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी विजेताओं (35) को पुरस्कृत किया गया।





फणीश्वर नाथ 'रेणु' – ग्रामीण संवेदनाओं के सर्जक

(जीवन परिचय)

फणीश्वर नाथ 'रेणु' हिंदी साहित्य के ऐसे महान लेखक थे, जिन्होंने गाँव, ग्रामीण जीवन, उनकी खुशियाँ-दुःख, लोकगीत, बोलियाँ और संघर्षों को पहली बार साहित्य के केंद्र में रखा। उन्हें हिंदी में आंचलिक साहित्य का जनक कहा जाता है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास इतने वास्तविक लगते हैं कि पाठक को लगता है जैसे वह गाँव की गलियों में घूम रहा हो।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के पूर्णिया (अब अररिया) ज़िले के औराही-हिंंगना गाँव में हुआ। उनके पिता शीलनाथ मंडल एक आदर्श शिक्षक थे और माता सरल और संस्कारशील थीं। बचपन से ही रेणु जी का गाँव से गहरा लगाव था—वहीं की मिट्टी, वहीं के लोग, वहीं का वातावरण उनकी रचनाओं की आत्मा बन गया।

शिक्षा

उनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही हुई। उसके बाद वे उच्च शिक्षा के लिए अररिया, पटना और वाराणसी गए। पढ़ाई के दौरान वे साहित्य, संगीत, लोककला और समाज के मुद्दों में रुचि लेने लगे।

यही कारण था कि आगे चलकर उनका साहित्य लगातार समाज की सच्चाइयों को उजागर करता रहा।

स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव

रेणु जी सिर्फ लेखक ही नहीं, बल्कि एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी भी थे। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में हिस्सा लिया। बाद में वे नेपाल के प्रजातांत्रिक आंदोलन में भी शामिल हुए और वहाँ की जनता की आजादी के लिए संघर्ष किया। इन संघर्षों ने उन्हें ज़मीनी स्तर का अनुभव दिया, जिसने उनके लेखन को और भी गहरा बना दिया।

साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश

उनकी लेखन यात्रा धीरे-धीरे शुरू हुई, लेकिन उन्हें असली पहचान मिली वर्ष 1954 में, जब उनका प्रसिद्ध उपन्यास "मैला आँचल" प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास हिंदी साहित्य में एक ऐतिहासिक उपलब्धि माना जाता है। इसमें मिथिलांचल (बिहार) के गाँवों का जीवन, वहाँ की बोली, रीतियाँ, डॉक्टर प्रशांत जैसे पात्रों के माध्यम से समाज की वास्तविक तस्वीर दिखाई गई है।



अन्य प्रमुख रचनाएँ

परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा, पंचलाइट, ठुमरी, मारे गए गुलफाम (जिस पर आधारित फिल्म तीसरी कसम को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला)

लेखन की विशेषताएँ

फणीश्वर नाथ रेणु की लेखनी की सबसे बड़ी खूबी थी उसकी सादगी और सच्चाई। उनकी रचनाओं की मुख्य विशेषताएँ— लोकभाषा और बोलियों का सुंदर प्रयोग; गाँव की संस्कृति, त्योहार, लोकगीतों का जीवंत वर्णन; पात्रों का अत्यंत वास्तविक, मानवीय और भावपूर्ण चित्रण; समाज के उपेक्षित वर्गों को आवाज देना; भावनाओं, संघर्ष और जीवन की छोटी-छोटी बातों को गहराई से लिखना। उनकी कहानियाँ पढ़ते समय पाठक को लगता है कि कोई वास्तविक व्यक्ति सामने बैठकर अपनी जिंदगी सुना रहा है।

सम्मान और योगदान

रेणु जी को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक सम्मान मिले। वे ऐसे लेखक थे जिन्होंने साबित किया कि गाँव सिर्फ पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि साहित्य का मुख्य केंद्र भी हो सकता है। उनकी रचनाओं ने हिंदी साहित्य में नया प्रयोग, नई शैली और नई सोच की शुरुआत की।

निधन

फणीश्वर नाथ 'रेणु' का निधन 11 अप्रैल 1977 को हुआ। लेकिन वे अपनी कहानियों के कारण आज भी पाठकों के दिलों में बसते हैं। उनका साहित्य आने वाली पीढ़ियों को गाँव, समाज और मानवीय मूल्यों के बारे में सच्चाई और संवेदना के साथ सोचने की प्रेरणा देता रहेगा।

सुकरात और सफलता का रहस्य

सुकरात ने एक व्यक्ति को सफलता का रहस्य बताने के लिए नदी किनारे बुलाया। उन्होंने व्यक्ति को नदी में उतरने को कहा और जब पानी उसकी नाक तक आ गया, तो उन्होंने उसका सिर पानी में डुबो दिया। जब व्यक्ति को बाहर निकाला गया, तो सुकरात ने उससे पूछा कि जब वह पानी में था तो उसे क्या चाहिए था। व्यक्ति ने कहा, "सांस लेना।" सुकरात ने जवाब दिया, "जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांस लेना चाहते हो, तो तुम्हें सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।"





व्यवसाय सितंबर, 2025 -

शीर्ष शाखाएं

(धनराशि लाख में)

कुल व्यवसाय				चालू जमा			
क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि	क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0192	मेरठ मुख्य	31580	1	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	2060
2	0261	सिंभावली	22909	2	0949	मथुरा	1215
3	0949	मथुरा	21942	3	2499	बिजनोर	1006
4	0627	सि.ला. बरेली	18241	4	0627	सि.ला. बरेली	1006
5	1949	नगर निगम	17361	5	0204	मुरादाबाद मुख्य	0973
बचत जमा				कासा			
क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि	क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1949	नगर निगम	7598	1	1949	नगर निगम	8249
2	0315	शिकारपुर	5966	2	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	7425
3	0261	सिंभावली	5628	3	0261	सिंभावली	6573
4	1876	एसएमआईसी अलीगढ़	5366	4	0315	शिकारपुर	6236
5	0205	कांधला	4934	5	0627	सि.ला. बरेली	5076
सावधि जमा				कुल अग्रिम			
क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि	क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1754	सि.ला. मुरादाबाद	8248	1	0192	मेरठ मुख्य	20965
2	0192	मेरठ मुख्य	6386	2	0261	सिंभावली	14584
3	0812	मेरठ कॉलेज	6351	3	0949	मथुरा	13052
4	0228	नैनीताल रोड बरेली	6110	4	1653	अधियाना	7926
5	0627	सि.ला. बरेली	5555	5	0812	मेरठ कॉलेज	7872





सुरक्षा सलाहकार



विदेशक ऐपों का उपयोग करके वित्तीय या संवेदनशील डेटा एकत्र करने वाले नकली एसएमएस से सावधान रहें



धोखाधड़ी की कार्यप्रणाली

- ❗ जालसाज संभावित पीड़ितों को नकली हेडर का उपयोग करके बल्क एसएमएस भेजते हैं, जिसमें बैंक के पास रिवाइरट पॉइंट्स के बैलेंस का उल्लेख होता है और ग्राहक से इन पॉइंट्स को भुनाने के लिए दिए गए यूआरएल पर जाने का अनुरोध किया जाता है।
- ❗ यूआरएल में बैंक का लोगो और एक "संदेश भेजें" बटन शामिल होता है।
- ❗ जब ग्राहक "संदेश भेजें" पर क्लिक करता है, तो व्हाट्सएप एक पहले से भरे हुए संदेश के साथ खुलता है जिसमें इनाम अंक के रिडीम करने का अनुरोध किया जाता है।
- ❗ व्हाट्सएप संदेश भेजने के बाद, ग्राहक को एक प्रतिक्रिया मिलती है जिसमें उनसे एक .apk फ़ाइल डाउनलोड करने के लिए कहा जाता है। यह फ़ाइल दुर्भावनापूर्ण है।
- ❗ एक बार जब दुर्भावनापूर्ण ऐप इंस्टॉल हो जाता है, तो यह वित्तीय/संवेदनशील जानकारी जैसे आधार नंबर, डेबिट कार्ड की जानकारी, पिन आदि मांगता है।



क्या करें

- ✅ हमेशा आधिकारिक संपर्क विवरण का उपयोग करके सीधे बैंक से संपर्क करके बैंक से होने का दावा करने वाले किसी भी एसएमएस या संदेश की प्रामाणिकता सत्यापित करें।
- ✅ केवल विश्वसनीय, आधिकारिक और प्रतिष्ठित स्रोतों से ही बैंक एप्लिकेशन डाउनलोड करें।
- ✅ बैंक विवरणी की नियमित समीक्षा करें। यदि कोई अनधिकृत लेनदेन दिखे तो तुरंत बैंक को सूचित करें।
- ✅ संदिग्ध एसएमएस/व्हाट्सएप संचार की रिपोर्ट चक्षु पोर्टल <https://sancharsathi.gov.in> पर करें।
- ✅ ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की रिपोर्ट करने और किसी भी साइबर अपराध की रिपोर्ट <https://www.cybercrime.gov.in> पर करने के लिए 1930 डायल करें।

सुरक्षा प्रथाएं



क्या न करें

- ❌ अज्ञात लिंक के माध्यम से पुरस्कारों को अपडेट करने या भुनाने का अनुरोध करने वाले अनचाहे संदेशों पर भरोसा न करें या उनका जवाब न दें।
- ❌ अनचाहे संदेशों में दिए गए लिंक से ऐप्स डाउनलोड करने से बचें।
- ❌ एसएमएस हेडर या नामों की वैधता की पुष्टि किए बिना उन पर कभी भरोसा न करें।
- ❌ अज्ञात या अविश्वसनीय प्रेषकों के लिंक पर क्लिक न करें या फ़ाइलें डाउनलोड न करें।
- ❌ कभी भी व्यक्तिगत, वित्तीय या संवेदनशील जानकारी किसी के साथ या किसी अज्ञात वेबसाइट/सोशल मीडिया/इंस्टैंट मैसेंजर ऐप जैसे व्हाट्सएप, टेलीग्राम चैट संदेश आदि में साझा न करें।

सुरक्षा सलाहकार 126A दिनांक: 25.06.2024

सीआईएसओ कार्यालय

